कविता को साहित्य की अहम विधा माना गया है । कोई व्यक्ति अगर साहित्य की सभी विधाओं में लिखता है और किसी विशेष विधा में उसे खासी पहचान मिल जाती है तब भी वह कवि की छवि को अपने से दूर नहीं होने देता । कवि होना , होता ही गौरव का विषय है । कवियों में संवेदनाएं इतने गहरे तक घर बना चुकी होती हैं कि उसकी सोच कई बार खुदा की चौखट तक दस्तक दे आती है । उसका व्यवहार इतना आदर्श हो चुका होता है कि कई सार्थक भी सपने लगते हैं । उसकी वाणी इतनी विश्वास भरी हो जाती है कि रेगिस्तान भी पानी का यकीन कर ले । उसका हृदय इतना कोमल हो चुका होता है कि गुलाब की एक पंखुड़ी भी उसे चूर चूर कर सकती है । जीते जी न सही पर एक दिन वह हजारों के लिए एक उदाहरण बन जाता है । एक समय तक व्यक्ति कविता लिखता है , धीरे-धीरे एक समय ऐसा आ जाता है, जब कविता उसे लिखने लग जाती है । उसके मुंह से निकला हर वाक्य कविता हो जाती है । वह कविता के लिए एक उदाहरण बन जाता है । आज लोग कविता तो खूब लिख रहे हैं पर उसके मर्म को भूलते जा रहे हैं । किसी को उस्ताद बना लेते हैं । पहले थोड़ा बहुत कुछ लिखते हैं फिर उसे उस्ताद को दिखाते हैं । उस्ताद उसमें कुछ मात्राएं इधर-उधर कर देता है । वो फिर उसे सोशल मीडिया पर डाल देते हैं । यार दोस्तों के सौ-पचास कमैंट्स आ जाते हैं । कहीं मंच पर दस बीस सुनने वाले तालियां बजा देते हैं । धीरे-धीरे चमकीले कपड़े, आलीशान गाड़ी साथ में एक असिसटेंट रख लेता है और खुद को एक कार्यक्रम के 50,000/- लेने वाला कवि मानने लग जाता है । कई बड़े मंचों पर ऐसे कवि पैसे देकर भी कविता पाठ करते देखे जाते हैं इसीलिए आज कवि तो छोटी-छोटी बस्तियों में सैकड़ों मिल जाते हैं पर कविता पूरे शहर में एक नहीं मिल पाती ।

कविता को अगर कहीं थोड़ी बहुत बचाकर रखा हुआ है तो कुछ बची हुई पत्र- पत्रिकाओं ने । इनमें लिखने वाले अधिकांश कवि बहुत बाद में , इंसान पहले होते हैं । इन्हें खुद को कवि कहलवाने में भी संकोच होता है । अगर इनसे कोई गलती से पूछ भी ले तो यही कहते हैं -"हां, कविता लिखने का प्रयास कर रहा हूँ, पता नहीं हर बार कुछ न कुछ कमी रह जाती है ।" ऐसे लोग बहुत बेहतरीन कविताएं लिखकर भी कविता की खोज में लगे रहते हैं और दूसरे वो जो अपने विजिटिंग कार्ड तक में नाम के साथ लिख बैठते हैं - अन्तर्राष्ट्रीय कवि । इन्हें शायद यह भी नहीं पता कि अभी तो इंसान होने की जमात में शामिल होने के लिए उनकी आखिरी सांस को इंतजार करना पड़ रहा है । कवि का सोपान तो अभी भी तीन कदम ऊपर है .

दरअसल कविता का हुनर इंसान को खुदा का एक ऐसा वरदान है कि फिर समाज को राह दिखाने के लिए खुदा की रहमतें शेष नहीं रह जाती । कितनों का जीवन कबीर, मीरा, सूरदास, निराला , गालिब, नागार्जुन ने बदल दिया है। सच्ची ,अच्छी और बड़ी कविता चमकीले कपड़ों, आलीशान गाड़ी,असिसटेंट रखने और 50,000/- रूपये लेने से नहीं उपजती, अच्छी कविता आखिरी छोर पर बैठे उस व्यक्ति पर चिंतन से उपजती है, जिसको जितनी बार भी लिखो, पूरी नहीं होती है, जिसको जितनी बार भी पढ़ो, समझ ही नहीं आती ।

रामअवतार वैरबा